

मुट्ठियाँ भीचते ट्रम्प, विश्व और भारत

सन्दर्भ

- 46 वर्षीय बराक ओबामा का अमेरिका, अब 70 वर्षीय डोनाल्ड ट्रम्प का अमेरिका बन गया है। व्हाइट हाउस की ऐतिहासिक सीढ़ियों पर खड़े होकर, लाखों-लाख अमेरिकियों और अनगिनत दुनियावालों को डोनाल्ड ट्रम्प ने संबोधित किया और अपने इस पहले ही संबोधन में सबको बता दिया कि वह क्या करने वाले हैं। कहते हैं कि 'पूत के पाँव पालने में ही दखिने शुरू हो जाते हैं' और डोनाल्ड ट्रम्प ने सत्ता सम्भालने के अपने पहले ही सप्ताह में दखिना दिया है कि कल का अमेरिका कैसा होगा।
- सवाल म. डोनाल्ड ट्रम्प के व्यक्तित्व का नहीं बल्कि यह है कि क्या भूमंडलीकरण का ताना-बाना टूटने वाला है? अमेरिकी उसी तरह के आर्थिक संकट में है जिस तरह के संकट में समूची दुनिया है। लेकिन क्या अमेरिका स्वयं को अकेले इस आर्थिक संकट से उबार लेगा? और सबसे बड़ा सवाल यह है कि ट्रम्प की आर्थिक नीतियों का भारत पर प्रभाव क्या होगा?

ट्रम्प की नीतियों के वैश्विक प्रभाव

- अमेरिका के नव नरिवाचिता राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा की एशिया नीति की धुरी माने जाने वाली व्यापार समझौते 'ट्रांस पैसिफिक पार्टनरशिप' (टीपीपी) से बाहर निकलने के लिये एक कार्यकारी आदेश पर दस्तखत कर दिया है।
- अमेरिकी राष्ट्रपति ने शरणार्थी कार्यक्रम को नलिंबति करने और मुस्लिम बहुल देशों के नागरिकों के लिये वीजा नयियों को सख्त बनाने के एक आदेश पर हस्ताक्षर किया है। इसके तहत युद्ध, राजनीतिक अस्थिरता, भूख और धार्मिक पूर्वाग्रहों से बेघर हुए वसिथापितों को अमेरिका में शरण देने का कार्यक्रम अगले चार महीने तक नलिंबति रहेगा।
- इसके अलावा सीरिया, ईरान, इराक, लीबिया, सोमालिया, सूडान और यमन के नागरिकों पर 90 दिनों तक अमेरिका में प्रवेश करने पर पाबंदी लगा दी गई है।
- जाहिर है टीपीपी रद्द करने से संदेश गया है कि अमेरिका अब अंतरराष्ट्रीयवाद की नीति से कदम पीछे खींच रहा है। इसके फलस्वरूप नशिचिता ही ट्रम्प को लेकर एशिया में अमेरिका की साख पर भरोसा कम होगा। अमेरिका के टीपीपी से हट जाने से ट्रम्प और अमेरिका के इरादों को लेकर अनशिचिताएँ बढ़ गई हैं।
- शरणार्थी कार्यक्रम को नलिंबति करने को अमेरिका के नागरिक अधिकार समूहों ने नरिशानक और इसे भेदभावपूर्ण बताया है। इन समूहों का कहना है कि इस फैसले से शरणार्थी जोखिम वाली जगहों में फँस जाएंगे और वसिथापितों को शरण देने के मामले में अमेरिका का नाम खराब होगा। शरणार्थी समस्या के समाधान की दशिा में अमेरिका से यह उम्मीद व्यक्त की जा रही थी कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ के नेतृत्व में अहम् भूमिका अदा करेगा लेकिन अमेरिका के इस कदम से उन उम्मीदों को झटका पहुँचा है।

भारत के संबंध में ट्रम्प की नीतियों का प्रभाव

- गौरतलब है कि भारत सहित दुनियाभर के बाजार ट्रम्प के जीत की उम्मीद नहीं कर रहे थे। यह नामुमकनि लग रहा है। ऐसे में ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने से देश और दुनिया के बाजारों को तगड़ा झटका लगा है। ट्रम्प की अमेरिका फर्स्ट की नीति और सभी वदिशी व्यापार समझौतों पर दोबारा वचिर करने जैसी तमाम चीजें अमेरिका और भारत के व्यापार समझौतों पर नशिचिता तौर पर असर डालेंगी।
- अमेरिका की अर्थव्यवस्था में भारतीयों की भूमिका अद्वितीय है। प्रवासी भारतीय सबसे अधिक समृद्ध, सबसे अधिक शकिषिता, सबसे अधिक खुशहाल और सबसे अधिक मर्यादति समुदाय है। यदि उनके आगमन पर ट्रम्प रोक लगाएंगे और उनसे रोजगार छीनेंगे तो भारत चुप कैसे बैठेगा? इससे वे अमेरिका की ही हानि करेंगे। यदि भारतीय लोग अमेरिका छोड़ दें तो ट्रम्प इतने योग्य और अनुशासति व्यक्तियों की भरपाई कैसे करेंगे?
- राष्ट्रपति बनते ही ट्रम्प ने अपने अटपटे लगने वाले वादों पर अमल करना शुरू कर दिया है, उससे यह संकेत मलिता है कि उक्त मुद्दा शीघ्र ही वविदास्पद बनने वाला है। ऐसे में दो देशों के नेताओं के बीच कायम किया गया दखिावटी सद्भाव कहाँ तक टकि पाएगा? ट्रम्प का कहना है कि अमेरिकी पूंजी का फायदा दुनिया के दूसरे देश उठा रहे हैं। अब ट्रम्प-प्रशासन इस नीति पर पुनर्वचिर करेगा तो क्या भारत में लगी अमेरिकी पूंजी और उससे पैदा होने वाले रोजगारों पर भी ट्रम्प की वकर-दृष्टि होगी?
- ट्रम्प के मुताबकि एच1बी वीजा प्रोग्राम अनुचिता है और वह इसे खत्म करने की दशिा में कदम भी बढ़ा चुके हैं। इन परिस्थितियों में भारतीय आईटी कंपनियों को सबसे ज़यादा मार झेलनी पड़ सकती है।
- ट्रम्प का भारत को लेकर हमेशा से ही दोहरा रुख देखा गया है। एक ओर वे यह कहते दखिते हैं कि भारत काफी अच्छा प्रदर्शन कर रहा है और दूसरी ओर वे यह कहते हैं कि वे भारतीयों से अमेरिकी नौकरियों वापस लेंगे। अमेरिका की नौकरी देश के बाहर न जाने देने के रवैये का सीधा सा मतलब यह है कि अब उन भारतीयों के लिये मुश्कलें बढ़ जाएंगी जो वहाँ नयिमति तौर पर आते-जाते रहते हैं या वहाँ से अपना बजिनेस संचालति कर रहे हैं।
- ट्रम्प अमेरिका के कॉर्पोरेट टैक्स को 35 फीसदी से घटाकर 15 फीसदी पर लाने की तैयारी में है। इससे फोर्ड, जनरल मोटर्स और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियों वापस अमेरिका पर अपना ध्यान केंद्रति कर देंगी। फलस्वरूप भारत के मेक इन इंडिया अभियान को झटका पहुँच सकता है।

कुछ सकारात्मक पहलें

- हालाँकि डोनाल्ड ट्रम्प नीतियों में सकारात्मक आयाम भी खोजे जा सकते हैं। वदिति हो कि ट्रम्प अपने चुनावी अभियान के समय से चीन की आलोचना करते रहे हैं और चीन को अपना सबसे बड़ा वरिधी बताया है। ट्रम्प ने यह भी कहा है कि वह चीन को मुद्रा में छेड़छाड़ करने वाला देश घोषित करेंगे। इतना ही नहीं चीन पर भारी टैरिफ ड्यूटी लगाने की वकालत भी ट्रम्प कर चुके हैं। इससे भारत लाभ की स्थिति में रह सकता है।
- कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि ट्रंप के राष्ट्रपति बनने से भारत और अमेरिका के रक्षा और व्यापारिक समझौते बेहतर हो सकते हैं। साथ ही पाकिस्तान जैसे देशों के लिये दक्षिण हो सकती है क्योंकि ट्रंप पाकिस्तान को आतंकवादियों का सुरक्षा ठकाना पहले ही घोषित कर चुके हैं।

नक्षिकर्ष

- ट्रम्प ने अमेरिका को 12 राष्ट्रों के टीपीपी से मुक्त कर लिया है। इन राष्ट्रों पर चीन का दबाव बढ़ेगा। ट्रम्प 'नाटो' सैन्य संगठन को भी अपरासंगिक कह चुके हैं। वे पुतन को अमेरिका के बहुत निकट लाना चाहते हैं। वे मैक्सिको और अमेरिका के बीच दीवार खड़ी करने पर तुले हैं। वे जलवायु संबंधी वैश्विक सर्वसम्मति के भी वरिद्ध हैं। उनका और उनकी नीतियों का अमेरिका में ही जमकर वरिधी हो रहा है। वे किसी को नहीं बख्श रहे। उन्होंने अपनी पार्टी के असंतुष्ट नेताओं और अमेरिकी पत्रकारों की भी खूब खबर ली है। ऐसी हालत में ट्रम्प के साथ चलते वक्त भारत को अपने कदम फूँक-फूँककर रखने होंगे।
- कई दशक पहले अमेरिका के प्रसिद्ध वदिश मंत्री जॉन फ्रोस्टर डलेस ने बाहर जाने वाले अमेरिकी डॉलर के बारे में कहा था कि सहायता या वनियोग के नाम पर बाहर जाने वाला एक डॉलर, तीन डॉलर बनकर वापस लौटता है। भारत जैसे देशों में लगी अमेरिकी पूंजी हमेशा अमेरिका के लिये अधिक फायदेमंद रही है।
- गौरतलब है कि विशेषज्ञ ट्रम्प को ऐसा नेतृत्वकर्ता नहीं मानते जो काफी सोच-वचिार कर नीतितगत फैसले करता हो। भूमंडलीकरण एक ऐसी सरंचना है जहाँ कुछ भी बस एक तरफ से लिया या दिया नहीं जाता। यदि ट्रम्प अपने देश में नौकरियों की वापसी चाहते हैं तो ज़ाहिर सी बात है उन्हें उस स्थिति के लिये भी तैयार रहना होगा जब बाकी के देश अपना बाज़ार भी वापस मांगेंगे।
- दुनिया भर के संसाधनों का दोहन और दुनिया भर के बाज़ारों में अपने माल की खपत से ही अमेरिका वह बना है जो वह आज है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में अमेरिका खुले बाज़ार का झंडाबरदार रहा है और इसी नीति के अंतर्गत अमरीकी कंपनियों ने दुनिया भर के बाज़ारों में अपना पाँव जमा लिया है। यदि ट्रम्प खुद को अलग-थलग करते हैं तो ज़ाहिर है कि विश्व के बाज़ारों से इन कंपनियों के पाँव उखड़ने शुरू हो जाएंगे और ऐसी उम्मीद की जा रही है कि ट्रम्प देर-सबेर मुट्ठियाँ खोलकर अपने उखड़ते पैरों की तरफ अवश्य देखेंगे।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/muttiya-pump-its-trump-world-and-india>

